दलित साहित्य का स्वरूप

विकास और प्रवृत्तियाँ

डॉ. गुणशेखर

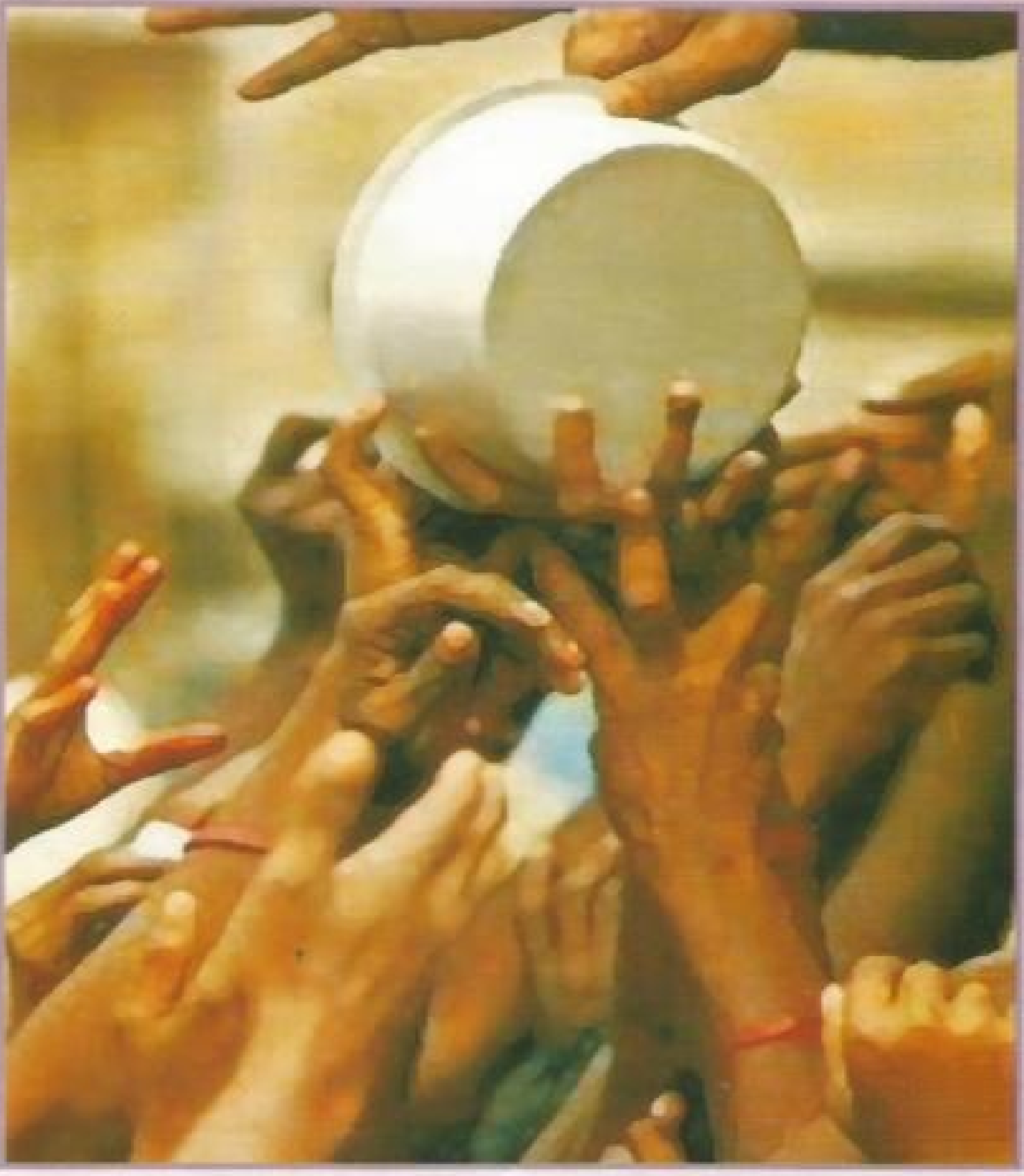

डॉ. गुणशेखर की पुस्तक 'दलित साहित्य का स्वरूप : विकास और प्रवृत्तियाँ' इधर दलित साहित्य की समालोचना और मूल्यांकन पर केन्द्रित दूसरी कृतियों से इस मायने में भिन्न है कि इस पुस्तक में लेखक न केवल दलित चेतना की अवधारणा, पृष्ठभूमि व समकालीन संदर्भों को हिंदी व भारतीय साहित्य के समकालीन वैचारिक-बिंदुओं के परिप्रेक्ष्य में रख कर देखते हैं बल्कि दलित साहित्य में 'स्वानुभूति' और 'सहानुभूति' के बहुप्रचलित विवाद को एक तार्किक आधार प्रदान करते हुए दिखते हैं। वे हिंदी साहित्य, खास तौर से हिंदी कविता में मौजूद दलित व स्त्री स्वर की बारीक पड़ताल करते हैं तो दूसरी तरफ सवर्णों द्वारा सहानुभूति में लिखे गए दलित साहित्य की भी कलई खोलते हैं—'वेदना, नकार और विद्रोह को गैरदलित लेखक ठीक उसी संजीदगी से नहीं ले सकते जैसा कि दलित ले सकते हैं।'

अपनी सुलझी हुई दलित-दृष्टि और आलोचनात्मक विवेक के बूते लेखक बड़ी साफगोई से कहते हैं—"श्रीलाल शुक्ल का उपन्यास 'राग-विराग' दलितों के प्रति 'राग' कम 'विराग' का आख्यान ज्यादा लगता है।"

यह कृति न केवल दलित साहित्य पर विमर्श और बहस को गति देने की दिशा में एक महती प्रयास है बल्कि इस पुस्तक में दलित साहित्य के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से संबद्ध अनगिनत उद्धरण हैं, जो शोध-छात्रों के लिए भी अत्यंत उपयोगी साबित होंगे।

—अभिषेक कश्यप

दलित साहित्य का स्वरूप
विकास और प्रवृत्तियाँ

समर्पण

विशेष कृतज्ञता के लिए अपने प्रातः स्मरणीय उदारमना गुरुवर प्रोफेसर सूर्यप्रसाद दीक्षित, प्रखर दलित साहित्यकार और चिंतक प्रोफेसर कालीचरण स्नेही, डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह और डॉ. रामाश्रय सविता का हृदय से विशेष आभार ज्ञापित करता हूँ क्योंकि इनकी सद्भावना और समय-समय पर मिले सहयोग के बिना यह सारस्वत यज्ञ पूरा होने वाला नहीं था।

मैं अपने उदार और सक्रिय निर्देशक डॉ. पवन अग्रवाल को अंतर्मन से साधुवाद और आभार अर्पित करता हूँ कि आदि से अंत तक के आपके सहयोग से ही मैं स्वयं को इसकी प्रस्तुति जैसी पूर्णाहुति के सन्निकट पा रहा हूँ।

इस अनुष्ठान की समिधा जुटाने में सदैव मेरा साथ देने और टंकण जैसे गुरुतर दायित्व का निर्वहन करने के लिए मैं अपने बेटे अनुराग शर्मा को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ कि इन्होंने रात-दिन एक करके इस श्रम-साध्य कार्य को संपन्न किया है। अनुराग के अतिरिक्त टंकण सहयोग हेतु श्रीमती दर्शनी और रूप-सज्जा में सहयोग हेतु श्री ओमप्रकाश द्विवेदी का भी आभारी हूँ। दोनों आइ.ए.एस. अकादमी, मसूरी में पदस्थ हैं। इसके साथ ही संतति वत्सला परमपूज्या माता श्रीमती कमला देवी, बेटी आरती, बेटे अभिषेक और अपनी पत्नी श्रीमती गायत्री शर्मा के प्रति भी हार्दिक आभार प्रकट करना चाहता हूँ क्योंकि इनकी रातों की नींदें भी इसकी नींव में सोई हैं।

जिनके उदार सहयोग और प्रोत्साहन के फलस्वरूप ही लखनऊ रुक और टिक कर इस प्रबंध को रूप और आकार दे सका, अपने लखनऊ प्रवास काल की ऐसी निरालस और स्नेही आश्रयदाता श्रीमती रीता सिंह जी का हृदय के प्रत्येक कोने से आभार प्रकट करते हुए अपने को आंशिक ऋण-मुक्ति का सुख दे रहा हूँ।

अंत में डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी और अवंतिका प्रसाद मरमट (जो अब इस दुनिया में नहीं हैं) को अपनी अत्यंत नम्र श्रद्धांजलि के साथ इन शब्दों में आभार प्रकट करना चाहता हूँ कि यदि अन्य दलित साहित्यकारों के प्रश्नों की बौछार से आपने मुझे बचाया न होता तो शायद इस अनुष्ठान की अग्नि-शिखा असमय बुझ गई होती।

इनके अतिरिक्त इस ग्रंथ में जिन-जिनका भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग मिला उन्हें हृदय से साधुवाद अर्पित, समर्पित है।

भूमिका

भारतीय साहित्य में दलित लेखन को दस्तक दिए कई दशक गुजर गए। सुप्रसिद्ध कथाकार-संपादक कमलेश्वर के संपादन में मराठी दलित साहित्य पर केंद्रित 'सारिका' का विशेषांक प्रकाशित होने के कुछ बरसों बाद महीप सिंह ने अपनी पत्रिका 'संचेतना' का अंक दलित लेखन पर केंद्रित किया। उसके बाद तो एक ऐतिहासिक सिलसिला ही शुरू हो गया, जो आज अपने उत्कर्ष पर है। हमने न केवल 'रमणिका फाउंडेशन' की ओर से सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं का दलित साहित्य प्रकाशित किया, बल्कि फाउंडेशन की त्रैमासिक पत्रिका 'युद्धरत आम आदमी' के कई विशेषांक दलित साहित्य व दलित विमर्श को समर्पित किए, जिनमें सभी भारतीय भाषाओं के दलित लेखकों-चिंतकों की सक्रिय भागीदारी रही। कई महत्वपूर्ण दलित लेखकों-चिंतकों ने तो हमारे विशेषांकों के संपादन की जिम्मेवारी भी सहर्ष स्वीकार की।

इन सारे सुखद बदलावों के बावजूद यह बात मुझ सहित अधिकांशः दलित लेखकों व विमर्शकारों को सालती रही है कि समकालीन दलित लेखन का परिदृश्य इतना व्यापक होने के बावजूद दलित साहित्य में समालोचना का विकास उस तरह या उस गति से नहीं हो पा रहा, जैसा समूचे समृद्ध दलित साहित्य वाङ्मय को देखते हुए अपेक्षित है। दूसरी सबसे चिंताजनक स्थिति यह है कि जिस तरह सवर्ण लेखक सहानुभूति की दृष्टि से दलित साहित्य रचते थे, आज कुछ उसी सहानुभूति और किंचित अनमने भाव से वे दलित साहित्य की समालोचना में भी रत हैं। दलित बुद्धिजीवियों के बीच से दलित समालोचना का उभार न होना संभवतः आज दलित साहित्य की सबसे बड़ी विडंबना है।

ऐसी स्थिति में डॉ. गुणशेखर की पुस्तक 'दलित साहित्य का स्वरूप : विकास और प्रवृत्तियाँ' एक अपवाद है जो न केवल गहरी आलोचकीय दृष्टि से दलित साहित्य की अवधारणा पर विचार करती है बल्कि दलित साहित्य के खिलाफ जारी षड्यंत्रों और विरोधाभासों की भी पोल खोलती है। यहाँ गुणशेखर श्रमसाध्य शोध और एक खास तरह की तटस्थ समालोचकीय दृष्टि से दलित साहित्य के समूचे परिदृश्य पर विचार

करते हैं और इस प्रक्रिया में कई चीज़ें बिल्कुल नयी रोशनी में सामने आती हैं।

डॉ. गुणशेखर की यह पुस्तक न केवल दलित साहित्य के मूल्यांकन की दिशा में एक प्रभावी हस्तक्षेप है बल्कि यह दलित विमर्शकारों को दलित साहित्य की विवेकपूर्ण समालोचना के लिए भी प्रेरित करेगी।

—रमणिका गुप्ता

शुभाशंसा

मैंने डॉ. गंगाप्रसाद शर्मा (डॉ. गुणशेखर) द्वारा प्रणीत इस पुस्तक का पारायण मनोयोगपूर्वक किया। डॉ. गुणशेखर सर्वथा प्रबुद्ध एवं सघन स्वाध्यायी शिक्षक हैं। वे निरन्तर समय सचेत रहे हैं, साथ ही सहज जिज्ञासु भी।

इस कृति में शर्मा जी ने हिन्दी दलित साहित्य का इतिहास, विकास, समाज, मनोविश्लेषण एवं साहित्यशास्त्र प्रस्तुत किया है। लेखक की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता यह रही है कि उसने दलित दर्शन का दिग्दर्शन नितांत निरपेक्ष रूप से किया है। इसमें वस्तुनिष्ठता एवं न्यायनिष्ठता का युगपत निर्वाह हुआ है। दलित वर्ग के प्रति लेखक संवेदनशील है, पूर्ण प्रतिबद्ध है किन्तु दलित और गैर-दलित, दोनों के प्रति समन्यवयशील अर्थात् उभयनिष्ठ है।

इस कृति में स्वाध्याय, चिन्तन और सापेक्षिक विश्लेषण—सबका उपयोग किया गया है। मेरे विचार से इसे हृदयंगम कर लेने वाला किसी द्विविधा से ग्रस्त नहीं होगा। यह दलित दृष्टि हिन्दी पाठकों के मन में समरसता पैदा करेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं इस स्तरीय कृति के लिए डॉ. गुणशेखर को साधुवाद देता हूं।

सस्नेह

—प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित
पूर्व पत्रकारिता, हिन्दी विभागाध्यक्ष,
लखनऊ विश्वविद्यालय

अनुक्रम

भूमिका
शुभाशंसा
दलित तथा दलित चेतना की अवधारणा और पृष्ठभूमि 13
दलित साहित्य में स्वानुभूति और सहानुभूति 44
हिंदी काव्य में दलित चेतना 73
आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य में दलित चेतना 119
दलित आत्मकथाएँ और दलित चेतना 148
दलित साहित्य की प्रवृत्तियाँ 175
दलित साहित्य का साहित्येतिहास में योगदान 193
दलित साहित्य की विशेषताएँ 217

दलित तथा दलित चेतना की अवधारणा और पृष्ठभूमि

दलित साहित्य आधुनिक भारतीय साहित्य की एक विशिष्ट शाखा के रूप में उभरकर आज हिन्दी वाङ्मय की मुख्यधारा से जुड़ गया है। साहित्य की यह अत्यंत वेगवती अद्यतन धारा अनेक अवरोधों-विरोधों के बावजूद लगभग अप्रभावित और अबाधित प्रवाह के साथ गतिशील है। दलित साहित्य आधुनिक संदर्भों में प्रगतिशील साहित्य का नवीनतम संस्करण है। उसमें सर्वहारा जातियों के साहित्यकारों के उल्लेखनीय योगदान ने अनुभूतियों की सघन संवेदनात्मक अभिव्यक्तियों के द्वारा जिस नई ऊर्जा के साथ साहित्य में प्रवेश किया है, वह ऊर्जा शायद ही इससे पहले के हिन्दी साहित्यकारों में आंदोलन के स्तर पर मिली हो। प्रगतिशील आंदोलन के जन्म के साथ-साथ प्रयोगवादी प्रवृत्तियों ने भी अपने अंकुरण और स्फुरण से प्रगतिशील साहित्य की गति-मति को प्रभावित किया था लेकिन दलित साहित्य के साथ अभी ऐसा कुछ नहीं दीखता। इसलिए इसका पथ अभी तक अनवरुद्ध है।

दलित शब्द का अर्थ

दलित साहित्य की अवधारणा को स्पष्ट करने और समझने के पहले इसके कोशीय और व्यावहारिक अर्थों का परिज्ञान अत्यावश्यक है। दलित साहित्य में यद्यपि दलित शब्द का अर्थ अब तक विवादास्पद रहा है और आंशिक रूप से अभी भी है किंतु इतना तो निर्विवाद रूप से हर कोई स्वीकारेगा कि यदि आर्थिक आधार को छोड़ दिया जाए तो सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर अनुसूचित जाति-जनजाति के लोग ही दलित कहे जा सकते हैं।

अर्थ की परिसीमाओं में दलित शब्द संज्ञा भी है और विशेषण भी। आर्थिक रूप से पिछड़ा या विपन्न सवर्ण का विशेषण बन कर तो दलित आ सकता है किंतु संज्ञा के रूप में शायद कभी नहीं। दलित ब्राह्मण, दलित ठाकुर या दलित बनिया थोड़ी देर के लिए इस अर्थ में ग्राह्य है कि वह उस वर्ग के किसी व्यक्ति विशेष की विपन्नता या आंशिक रूप से उसके किसी शोषण को संकेतित कर रहा होता है किंतु यह दलित शब्द सदैव और संपूर्ण रूप से इनमें से किसी वर्ग पर कभी लागू